T.D.C Part-I

Dr. Rushma Sultana
Assistant Professor
Deptt of Philosophy
Vaishali Mahila college B.R.A B.U

Futuremate

सांख्य दर्शन : सत्कार्यवाद

सांख्य दर्शन के रचयिता महर्षि कपिल है। ये दर्शन अत्यंत प्राचीन है। इसकी प्राचीनता इस बात से सिद्ध होती है कि श्रुति, स्मृति, पुराण आदि समस्त पुरातन कृतियों में इस विचार-धारा की झलक दिखाई पड़ती है। सांख्य-दर्शन का मूल ग्रंथ है कपिल का तत्व-समाज। यह अत्यंत ही संक्षिप्त और सारगर्भित है। अतः सांख्य शास्त्र का मर्म विस्तार-पूर्वक समझने के लिए उन्होंने सांख्य-सूत्र नामक विशद ग्रंथ की रचना की। इसे 'निरीश्वर सांख्य' भी कहते हैं; क्योंकि महर्षि कपिल ने ईश्वरवाद की स्थापना नहीं की है। प्रायः उनका विचार था कि ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध नहीं किया जा सकेगा। योग-दर्शन में ईश्वर का प्रतिपादन किया गया है। अतः उसे 'सेश्वर-सांख्य' कहते हैं।

सत्कार्यवाद

सांख्य-दर्शन का मुख्य आधार है सत्कार्यवाद। अब यहाँ सवाल यह है कि कार्य की सत्ता उसकी उत्पत्ति के पूर्व कारण में रहती है या नहीं? न्याय-वैशेषिक और बौद्ध-दर्शन उत्तर देते है — नहीं। यदि उत्पत्ति के पूर्व ही कार्य की सत्ता विद्यमान थी तब फिर उत्पन्न होने का अर्थ ही भी क्या रह जाता? और निमित्त कारण का प्रयोजन ही क्या रह जाता है? और यदि मिट्टी में घड़ा पहले ही से मौजूद था तो फिर कुम्हार को मेहनत करने और चाक घुमाने की क्या जरूरत है? इसके अलावा यदि कार्य पहले ही उपादान कारण में मौजूद था तो फिर हम कारण और कार्य का भेद किस आधार पर करते है? किन्ही

Scanned by CamScanner

DATE

और घड़ा दोनों के लिए एक ही नाम का प्रयोग क्यों नहीं करते? मिट्टी का लोंदा ही घड़े का काम क्यों नहीं देता? यदि यह कहा जाए कि दोनों में (मिट्टी और घड़े में) आकार (Form) को लेकर भेद है, तब तो यह स्वीकार करना होगा कि कार्य में कोई (वस्तु विशेष आकृति) ऐसी है जो कारण में नहीं थी, अर्थात् कार्य वास्तविक रूप से कारण में विद्यमान नहीं था। यह सिद्धान्त (अर्थात् कार्य अपनी उत्पत्ति से पूर्व कारण में विद्यमान नहीं रहता है) 'असत्कार्यवाद' कहलाता है।

PAGE

Scanned by CamScanner